अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2012) | दिनांक 22.12.2012

पांचवा वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

संजया – 25

प्र.1 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) छेदोपस्थापनीय व परिहार विशुद्धि चारित्र कौन से तीर्थंकर के समय पाया जाता है? व उनमें कौन सा कल्प पाया जाता है?

(ख) जिनकल्प व कल्पातीत किसे कहते हैं?

(ग) परिहार विशुद्धि चारित्र वाले आठवें देवलोक से आगे क्यों नहीं जाते हैं?

(घ) इत्वरिक चारित्र से आप क्या समझते हैं?

(ङ) वेदन किसे कहते हैं? ग्यारहवें से चौदहवें गुणस्थान तक कितने कर्मों का वेदन होता है?

(च) संज्ञा कितनी व किस कर्म के उदय से? प्रथम तीन चारित्र में कौनसी संज्ञा पाई जाती है?

(छ) छेदोपस्थापनीय चारित्र किसे कहते हैं तथा इसके भेदों के नाम लिखें?

प्र.2 किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिये – 5

(क) प्रत्येक बुद्ध किसे कहते हैं?

(ख) परिहार विशुद्धि चारित्र वालों में आनुपारिहारिक व कल्पस्थित साधु कौन सा तप करते हैं?

(ग) मोहनीय कर्म के उपशम या क्षय से किस चारित्र की प्राप्ति होती है?

(घ) आयुष्य तथा मोह कर्म का बंध किस–किस गुणस्थान तक होता है?

(ङ) विशिष्ट तपस्या के कारण किस चारित्र वालों का सहंरण नहीं होता?

(च) अनाहारक की स्थिति किस–किस समय में पाई जाती है?

(छ) सागरोपम किसे कहते हैं?

प्र.3 कोई पांच द्वार लिखें – 10

(क) परिहार विशुद्धि चारित्र – अन्तर द्वार (ख) छेदोपस्थापनीय चारित्र – सन्निकर्ष द्वार

(ग) परिहारविशुद्धि चारित्र – आकर्ष द्वार (घ) सामायिक चारित्र – कालद्वार

(ङ) यथाख्यात चारित्र – परिणाम द्वार (च) सूक्ष्म संपराय चारित्र – प्रव्रज्या द्वार

नियंठा – 25

प्र.4 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखें – 5

(क) ग्यारहवें गुणस्थान की स्थिति एक समय की किस अपेक्षा से कही गई है?

(ख) स्त्री को कौन सी लब्धि प्राप्त नहीं होती?

(ग) कौन सा निर्ग्रन्थ मूल गुण व उत्तर गुण में दोष लगाता है।

(घ) असबली किसे कहते हैं?

(ड) पुलाकनिर्ग्रन्थ में कौन–कौन सी संज्ञा पाई जाती है?

(च) बकुश के प्रकारों के नाम लिखें?

(छ) निर्ग्रन्थ में भाव कितने व कौन से पाते हैं?

प्र.5 कोई दस द्वार लिखें – 20

(क) कषाय कुशील – कर्म उदीरणा द्वार (ख) प्रतिसेवना – सन्निकर्ष द्वार

(ग) बकुश – क्षेत्र द्वार (घ) कषाय कुशील – ज्ञान व अध्ययन द्वार

(ङ) पुलाक् – कल्प द्वार (च) निर्ग्रन्थ – आकर्ष द्वार (छ) स्नातक – प्रव्रज्या द्वार

(ज) पुलाक – गति, स्थिति, पदवी द्वार (झ) निर्ग्रंथ – वेद द्वार

(ञ) स्नातक – प्रज्ञापना द्वार (ट) बकुश – काल द्वार

(ठ) प्रतिसेवना – ज्ञान व अध्ययन द्वार

गीतिका – नियंठा दिग्दर्शन – 10

प्र.6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त लिखें – 2

(क) कषाय कुशील में कितने शरीर व कितनी लेश्या पाई जाती है?

(ख) कौन से मुनि डंडो से सेना को भगाते हैं?

(ग) भगवती सूत्र के किस शतक व उद्देशक में पृथक पृथक निर्ग्रन्थों का वर्णन आया है?

(घ) भगवान ने छठे गुणस्थान में कितने योग बताए हैं?

प्र.7 कोई दो पद्य को अर्थ सहित पूरा करें – 8

(क) ''शिव–वट.....कदै नहि होय''।

(ख) ''पडिसेवी उत्तर गुण.....कदै नहिं होय''।

(ग) ''इम छट्ठो.....तूं मत खोय''।

(घ) ''सम्यक्त थिर.....नीं बातां सोय''।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 40

प्र.8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें –

(क) पच्चीस बोल का दसवाँ बोल अथवा काय योग के भेद लिखिए। 2

(ख) उद्दिदष्ट बर्जक प्रतिमा अथवा कायोत्सर्ग प्रतिमा लिखिए। 3

(ग) मति ज्ञान तथा मति अज्ञान में अन्तर अथवा अवग्रह आदि का कालमान लिखें। 2

(घ) आतप नामकर्म अथवा अनादेय नाम कर्म की परिभाषा लिखें। 2

(ङ) मनः पर्यवज्ञानी में योग, उपयोग, वीर्य और जीव का भेद लिखें। 3

अथवा

मतिश्रुत अज्ञानी में जीव का भेद, योग, उपयोग और वीर्य का भेद लिखें।

(च) भुज परिसर्प संज्ञी असंज्ञी अथवा 5 हरिवास 5 रम्यकवास के युगलियों की स्थिति लिखें। 2

(छ) लघुदण्डक के आधार पर समुद्घात अथवा पर्याप्ति की परिभाषा लिखें। 2

(ज) आत्मा की चतुर्भंगी अथवा संवर के बीस भेद की चतुर्भंगी लिखें। 3

(झ) पच्चीस बोल की चर्चा के आधार पर पर्याप्ति छः अथवा लेश्या छः की चर्चा

लिखें। 3

(ञ) छः द्रव्यों में रूपी अरूपी अथवा सावद्य पर चर्चा लिखें। 3

(ट) क्षमायाचना सूत्र अथवा अचौर्य अणुव्रत के अतिचार लिखें। 3

(ठ) रूपी–अरूपी द्वार अथवा हेय–ज्ञेय–उपादेय द्वार लिखें। 3

(ढ) दया हिंसा कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छः द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन? 3

अथवा

सम्यक्त्व–मिथ्यात्व कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छः द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(ण) द्रव्य अथवा काल के आधार पर मनः पर्यव ज्ञान का विषय लिखें। 3

(त) बारह अंग अथवा बारह उपांग के नाम लिखें। 3